Explore–Journal of Research
Peer Reviewed Journal
ISSN 2278 – 0297 **(Print)**
ISSN 2278 – 6414 **(Online)**
© Patna Women's College, Patna, India
https://www.patnawomenscollege.in/journal

इंटरनेट की दुनिया और हिंदी का बदलता रूप

• मंजुला सुशीला • शालिनी सिंह • आरती कुमारी
• जागृति कुमारी

Received : October, 2025
Accepted : January, 2026
Corresponding Author : मंजुला सुशीला

शोध सार: भूमंडलीकरण, इंटरनेट पर हिंदी भाषा के बढ़ते प्रसार, सोशल मीडिया के प्रभाव तथा अनुवाद ने हिंदी भाषा को वैश्विक स्वरूप प्रदान किया है। भूमंडलीकरण ने हिंदी को बाज़ार की व्यावसायिक भाषा के रूप में स्थापित किया। विभिन्न सॉफ्टवेयर एवं फॉन्ट्स की मदद से हिंदी ने डिजिटल संसार और कंप्यूटर में अपनी उपस्थिति सुदृढ़ की, जिसके परिणामस्वरूप इंटरनेट हिंदी का विकास हुआ। हिंदी भाषियों की विशाल जनसंख्या के कारण हिंदी सोशल मीडिया के क्षेत्र में प्रभावी संचार माध्यम के रूप में स्थापित हुई। इंटरनेट ने हिंदी की अभिव्यक्ति शैली को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर आधारित अनुवाद उपकरणों ने हिंदी अनुवाद को गति प्रदान की है। इस शोध पत्र के अंतर्गत इंटरनेट के माध्यम से हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता, सोशल मीडिया के प्रभाव से हिंदी का बदलता स्वरूप (हिंग्लिश एवं रोमनागरी) एवं एआई आधारित अनुवाद की बढ़ती उपयोगिता एवं सीमाओं का अध्ययन किया गया है। इस शोध पत्र का उद्देश्य इंटरनेट पर हिंदी भाषा की व्यापकता को समझना तथा हिंदी के नवीन भाषाई प्रयोगों जैसे हिंग्लिश, हिंदी भाषा का रोमनीकरण, एआई के अनुवाद उपकरणों का हिंदी अनुवाद में प्रयोग आदि का विश्लेषण करना है। संपूर्ण अध्ययन के उपरांत यह निष्कर्ष निकलता है कि हिंदी भाषा की परिवर्तनशीलता ही उसकी जीवंतता का प्रमाण है तथा भाषा के आधुनिकीकरण के साथ-साथ उसकी मूल प्रकृति का संरक्षण भी आवश्यक है।

संकेत शब्द: हिंदी, हिंग्लिश, रोमनागरी, इंटरनेट, सोशल मीडिया, एआई।

मंजुला सुशीला
Assistant Professor, Department of Hindi,
Patna Women's College (Autonomous),
Bailey Road, Patna–800 001, Bihar, India
E-mail: manjula.hindi@patnawomenscollege.in

शालिनी सिंह
B.A. III year, Hindi (Hons.), Session: 2023-2027,
Patna Women's College (Autonomous),
Patna University, Patna, Bihar, India

आरती कुमारी
B.A. III year, Hindi (Hons.), Session: 2023-2027,
Patna Women's College (Autonomous),
Patna University, Patna, Bihar, India

जागृति कुमारी
B.A. III year, Hindi (Hons.), Session: 2023-2027,
Patna Women's College (Autonomous),
Patna University, Patna, Bihar, India

भूमिका:

भाषा देश की अस्मिता, संस्कृति एवं परंपरा की संवाहिका होती है। भाषा का अस्तित्व उसकी परिवर्तनशीलता पर निर्भर करता है। हिंदी भाषा भी अपनी अनुकूलनशीलता, शब्दभंडार-विस्तार और सामाजिक आवश्यकता के अनुसार निरंतर विकसित होती रही है। संस्कृत से प्राकृत और प्राकृत से आधुनिक हिंदी तक की यात्रा में हिंदी ने अनेक विदेशी भाषाओं- अरबी, फ़ारसी, अंग्रेजी आदि के शब्दों को अपनाकर अपनी संरचना को और समृद्ध किया है। अन्य भाषाओं का समाहार करने की शक्ति के कारण हिंदी अपने को किसी भी परिस्थिति में उपयोगी बनाना जानती है। एक तरफ हिंदी भाषियों की विशाल जनसंख्या के कारण भूमंडलीकरण और बाजारीकरण के दौर में हिंदी व्यापक रूप से लोकप्रिय हो रही है, वहीं दूसरी तरफ हिंदी को विश्वभाषा बनाने में इंटरनेट महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। सोशल मीडिया और डिजिटल संवाद माध्यमों के कारण हिंदी का प्रयोग अधिक अनौपचारिक, संक्षिप्त और मिश्रित हो गया है, जिसके परिणामस्वरूप हिंग्लिश और हिंदी के रोमनीकरण का प्रसार तेजी से बढ़ा है। इन नवीन भाषाई प्रयोगों के

कारण हिंदी की लोकप्रियता में वृद्धि हुई है, परन्तु चिंता यह भी है कि हिंदी की मूल प्रकृति प्रभावित हो रही है। वैश्वीकरण ने हिंदी अनुवाद के क्षेत्र को भी समृद्ध किया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आधारित मशीनी अनुवाद ने हिंदी अनुवाद के स्वरूप को नई दिशा दी है, परन्तु संदर्भगत समझ का अभाव एक प्रमुख समस्या है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि इक्कीसवीं सदी की डिजिटल क्रांति ने हिंदी को नए अवसर एवं चुनौतियाँ, दोनों प्रदान की है।

उद्देश्य :

हमारे परियोजना कार्य का विषय है **'इंटरनेट की दुनिया और हिंदी का बदलता रूप'**। इंटरनेट ने हिंदी को नया स्वरूप प्रदान किया है, जिसे हमने अपने शोध कार्य द्वारा समझने का प्रयास किया है।

सामान्य उद्देश्य: इंटरनेट की दुनिया में हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता एवं वैश्विक स्वरूप को समझना।

विशिष्ट उद्देश्य: इंटरनेट के प्रभाव से हिंदी में हो रहे नवीन भाषाई प्रयोगों (हिंग्लिश, रोमनागरी) एवं एआई आधारित अनुवाद का अध्ययन करना।

अध्ययन पद्धति: हमने अपने परियोजना कार्य हेतु शोध प्रविधि की द्वितीयक एवं सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग किया है। विषय से जुड़े तथ्यों के लिए सम्बन्धित पुस्तकों, सर्वेक्षण के नतीजों, शोध पत्रों एवं इंटरनेट की मदद ली गई है।

वर्तमान परिदृश्य में हिंदी ग्लोबल अथवा वैश्विक गति से तकनीक और मुक्त बाजार की मित्र बनते हुए, विश्वभाषा के रूप में अपनी पहचान संपुष्ट कर रही है। भूमंडलीकरण एवं सूचना क्रांति ने विश्व स्तर पर हिंदी को बाजार और इंटरनेट की मुख्य भाषा के रूप में स्थापित किया है। हिंदी आज इंटरनेट पर सबसे अधिक प्रयोग होने वाली भाषाओं में से एक है। इस संदर्भ में यह उक्ति सटीक है:

"सूचना प्रौद्योगिकी के इस काल में देवनागरी लिपि का प्रचार प्रसार देश ही नहीं विदेशों में भी हुआ है।"

(पाण्डेय एवं पाण्डेय, 2007)

यूनिकोड के आगमन से हिंदी को तकनीकी क्षेत्र में पूर्ण समर्थन मिला। अब किसी विशेष फॉन्ट के बिना हिंदी को पढ़ना, लिखना और साझा करना संभव हो गया है। 'लीला', 'श्रीलिपि', 'ISM ऑफिस', 'LEAP ऑफिस' जैसे कंप्यूटर सॉफ्टवेयरों ने हिंदी मुद्रण और टंकण को सरल बनाया है। सरकारी और शैक्षणिक संस्थानों ने हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

डॉ हसीना बानो अपने लेख 'वैश्विक होती भाषा और देवनागरी लिपि' में लिखती हैं, **"हिंदी में अब कहानी, नाटक, उपन्यास, कविता, महाकाव्य आदि लिखने की उतनी आवश्यकता नहीं है जितनी आवश्यकता कंप्यूटर और इंटरनेट के लिए हिंदी शब्द विधान करने की है।"**

(वर्मा, 2015)

इंटरनेट पर प्रयुक्त हो रही हिंदी को इंटरनेट हिंदी की संज्ञा दी गई है जैसे वेबसाइट्स, सोशल मीडिया, ब्लॉग्स। सोशल मीडिया इंटरनेट पर आधारित संचार माध्यम है जिसका प्रभाव राजनीति, अर्थव्यवस्था, मनोरंजन, शिक्षा, रोजगार हर क्षेत्र में देखा जा सकता है। राकेश प्रवीर के अनुसार,

"आज संसार की लगभग हर भाषा पर सोशल मीडिया के प्रभाव को महसूस किया जा रहा है। इस नए माध्यम ने हर भाषा के प्रयोग के तौर तरीकों, शब्दकोश, शैली, शुद्धता, व्याकरण और वाक्य रचना को प्रभावित किया है।"

(प्रवीर, २०२२)

एक तरफ इंटरनेट ने हिंदी को वैश्विक स्वरूप प्रदान किया है, वहीं दूसरी तरफ भाषा के नवीनीकरण का मार्ग प्रशस्त किया है। हिंदी और अंग्रेजी शब्दावलियों का मिश्रित प्रयोग औपनिवेशिक काल से होता आ रहा है, परन्तु पिछले कुछ वर्षों में विज्ञापन, सिनेमा, इंटरनेट विस्तार और सोशल मीडिया के प्रभाव के कारण हिंग्लिश भारत में ऑनलाइन एवं ऑफलाइन तथा शहरी एवं ग्रामीण, दोनों ही क्षेत्रों में प्रभावी संचार माध्यम के रूप में उभरकर आई है। यह अब बोलचाल की भाषा के साथ-साथ कार्यस्थल एवं मुख्यधारा मीडिया के क्षेत्र में भी मुख्य भाषा के रूप में प्रयोग में लाई जा रही है।

कैंब्रिज डिक्शनरी में दी गई परिभाषा के अनुसार हिंग्लिश का अर्थ है, हिंदी और अंग्रेजी भाषा का मिश्रण, विशेषतः वह अंग्रेजी, जिसका उपयोग हिंदी बोलने वाले करते हैं।

साहित्य में हिंग्लिश का प्रथम प्रयोग अयोध्या प्रसाद खत्री द्वारा ब्रिटिश शासन पर व्यंग्य करते हुए लिखी हुई ग़ज़ल में मिलता है। स्तम्भकार देवयानी चौबल ने भी अपने लेखन में हिंग्लिश का प्रयोग किया है। १९६० के दशक में भारतीय लेखिका शोभा डे ने अपनी रचनाओं तथा भारतीय पत्रिका 'स्टारडस्ट' के कॉलमों में हिंग्लिश के तत्वों का प्रयोग किया है। २००५ में बलजिन्दर कौर महल की पुस्तक 'द क्वींस हिंग्लिश: हाउ टू स्पीक पुक्का डिक्शनरी' प्रकाशित हुई।

हिंग्लिश भाषा का विज्ञापनों में प्रयोग:

"ये दिल मांगे more"- पेप्सी

"ठंडा ठंडा cool cool"- नवरत्न तेल

हिंग्लिश भाषा का जनसंचार के क्षेत्र में प्रयोग:

"जल ताण्डव returns" (एबीपी न्यूज़)

"प्रधानमंत्री के Digital Dream का Connection Cut" (इंडिया टीवी)

बॉलीवुड के गीतों एवं संवादों में हिंग्लिश प्रयोग के कुछ उदाहरणः

"One two का four, four two का one,
My name is लखन, सजनों का सजन, मेरा नाम है लखन"

(फिल्मः राम लखन, 1989)

"Success के पीछे मत भागो, excellence का पीछा करो"

(फिल्मः थ्री इडियट्स, 2009)

हिंग्लिश भाषा का सामान्य बोलचाल में प्रयोग

"मैं तुझे call कर रहा था but तेरा phone switch off था Phone recharge करा ले"

"एक new shop open हुई है मेरे colony में"

मौखिक संचार के लिए व्यापक रूप से प्रयुक्त होने वाली हिंग्लिश भाषा शैली ने हिंदी के रोमनीकरण की प्रवृति का भी विकास किया है, अर्थात् देवनागरी के स्थान पर हिंदी भाषा के लिए रोमन लिपि का प्रयोग। 1981 में ब्रिटिश भारतीय लेखक सलमान रुश्दी द्वारा रोमन अक्षरों में लिखित **'मिडनाइट्स चिल्ड्रेन'** प्रकाशित हुआ जिसे मैन बुकर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। युवा पीढ़ी को रोमन अक्षरों को पढ़ना-लिखना अधिक सहज लगता है। अंग्रेजी का प्रयोग भारत में व्यावसायिक एवं उच्च शिक्षा की भाषा के तौर पर होता है, इसलिए नई पीढ़ी, जो अंग्रेजी के साथ बड़ी हुई है, उसके लिए देवनागरी का शुद्ध प्रयोग एक समस्या है। **रोमनागरी** रोमन लिपि में लिखी जा रही हिंदी के लिए ब्लॉगर्स और इंटरनेट उपयोगकर्ताओं द्वारा निर्मित एक लोकप्रचलित शब्द है। रोमनागरी लिपि में कम रोमन अक्षरों के कारण हिंदी के लंबे स्वरों (जैसे 'आ', 'ई', 'ऊ') को दो अक्षरों से लिखा जाता है। जैसेः **aa= आ, ii/ee= ई, uu/oo= ऊ**। कभी-कभी रोमनागरी में स्वर पूरी तरह से हटा दिए जाते हैं और केवल व्यंजन ही लिखे जाते हैं। इसे हम आधुनिक युग की भाग-दौड़ भरी ज़िंदगी से और जेन-ज़ी के बीच प्रचलित शॉर्टकट फैशन से जोड़ कर भी देख सकते हैं। आज की युवा पीढ़ी ने अपनी अलग भाषा बना ली है एवं भाषा को छोटा कर दिया है।

उदा: "aakhir koi ise prem maankr kb tk jiyega? Prem me ahankar ki koi jgh ni..." (डेटा फेसबुक से लिया गया)

यहाँ kab (कब) को **kb**, tak (तक) को **tk,** jagah (जगह) को **jgh** और nahi (नहीं) को **ni** लिखा गया है।

वर्तमान परिदृश्य में भाषाई शुद्धता का सवाल काफी गहरा हो गया है। अक्सर शुद्धतावादी विद्वानों द्वारा यह आरोप लगाए जाते रहे हैं कि वैश्विक हिंदी का यह नया स्वरूप हिंदी को न केवल विकृत कर रहा है, बल्कि इसके वास्तविक रूप को भी धीरे-धीरे समाप्त कर रहा है। वहीं, कई विद्वान यह तर्क देते हैं कि नई हिंदी न केवल अधिक संप्रेषणीय है बल्कि वैश्विक मंच पर प्रतिष्ठित भी हो रही है। हिंग्लिश के बढ़ते प्रयोग और हिंदी के रोमनीकरण ने शुद्धता बनाम संप्रेषणीयता तथा परम्परा बनाम आधुनिकता के बीच बहस को जन्म दिया है। किसी भी समाज में स्वतंत्रता के साथ-साथ अनुशासन भी आवश्यक है। यही नियम भाषा के लिए भी लागू होता है। भाषा में सजीवता बनी रहनी चाहिए किंतु भाषा की मूल प्रकृति को बदलना नहीं चाहिए। सुधीश पचौरी के शब्दों में,

"अगर आप शब्द नहीं लोगे दूसरी भाषा से तो हिंदी नहीं चलेगी, लेकिन आपको शब्दों को लेने में सावधानी होनी चाहिए और आप ऐसे लीजिए कि आपकी भाषा का तेवर नहीं बिगड़े, उसका गौरव बना रहना चाहिए।"

(पचौरी एवं शर्मा, 2002)

एक उदाहरण के तौर पर, आज स्कूलों में हिंदी के शिक्षक भी **समय सारणी** न कहकर **time table** शब्द का प्रयोग करते हैं, क्योंकि यह शब्द समय सारणी की अपेक्षा अधिक संप्रेषणीय एवं लोकप्रिय है। आज किसी भी उम्र का व्यक्ति यह प्रश्न नहीं करेगा, **'आज तुम्हारी मनोदशा कैसी है'**, बल्कि प्रश्न होगा, **'आज आपका मूड कैसा है'** क्योंकि मनोदशा बोलचाल की भाषा में अधिक प्रचलित नहीं है। **'One needs to change with time'** अंग्रेजी भाषा का वाक्य है। आज की युवा पीढ़ी हिंदी में इसे इस प्रकार बोलेगी, **'Time के साथ सबको change होना चाहिए'**, किंतु इसे और भी अच्छे से बोला जा सकता है, जिससे संप्रेषणीयता के साथ भाषा की गरिमा भी बनी रहे: **'समय के साथ सबको बदलना चाहिए।'**

अतः, यह आवश्यक है कि समय की माँग के अनुरूप स्वयं को बदलती हुई हिंदी अपने मूल रूप के साथ आगे बढ़े, एवं भाषा के संरक्षण और परिवर्तन के बीच सामंजस्य स्थापित करे।

वैश्वीकरण ने हिंदी अनुवाद के क्षेत्र को भी विस्तार प्रदान किया है। डॉ राजेंद्र प्रताप सिंह ने अपने लेख 'सामाजिक परिवर्तन और अनुवाद' में लिखा है,

"विश्व परिदृश्य में आज अनुवाद एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं व्यावहारिक विधा के रूप में स्थापित होने के साथ-साथ विश्व संस्कृति और सभ्यता का भी पर्याय बन चुका है।"

(सिंह एवं मिश्र, 2008)

बाजार और इंटरनेट की भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हिंदी में अनुवाद कार्य प्रभावी रूप से हो रहा है। भारत में डिजिटल कंटेंट और इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की बढ़ती संख्या के कारण मीडिया और मनोरंजन के क्षेत्र में भी हिंदी अनुवाद का क्षेत्र दिनानुदिन समृद्ध हो रहा है। उदाहरण फिल्मों एवं वेब सीरीज की डबिंग, सबटाइटलिंग

तथा न्यूज़ एजेंसियों के कंटेंट का अनुवाद। वर्तमान युग मशीनी युग है, तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) ने हिंदी भाषा के क्षेत्र में मशीनी अनुवाद की क्षमताओं को बदल कर रख दिया है। कुछ एआई अनुवाद सॉफ्टवेयर हैं, Google Translate, DeepL, Microsoft Bing. इनके अलावा एआई आधारित चैटबॉट भी अनुवाद में कारगर हैं: गूगल का जेमिनी, मेटा का मेटा एआई, ओपनएआई का चैटजीपीटी। बड़ी मात्रा में डेटा संभालने की क्षमता से लेकर सैकड़ों शब्दों का मिनटों में अनुवाद करने तक, मानव द्वारा निर्मित तकनीक आज कई प्रकार में मनुष्य से आगे निकल गई है, किंतु सटीकता, सांस्कृतिक बारीकियों, संदर्भगत समझ एवं दक्षता का अभाव इसकी सीमाएँ हैं।

उदा: **"On a very hot summer day in the fields, a thirsty crow flew everywhere in search of water."** (स्त्रोत: FirstCry.com 'The Story of the Thirsty Crow)

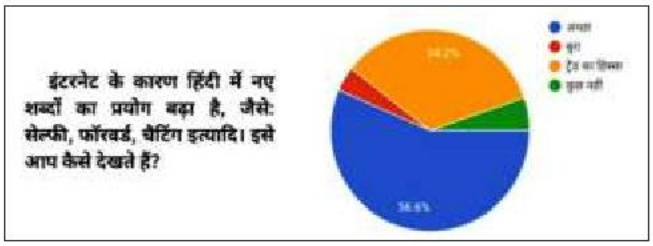
"गर्मी के एक बहुत गर्म दिन में, खेतों में एक प्यासा कौआ पानी की तलाश में इधर-उधर उड़ रहा था।" (गूगल ट्रांसलेट द्वारा उपर्युक्त वाक्य का अनुवाद)

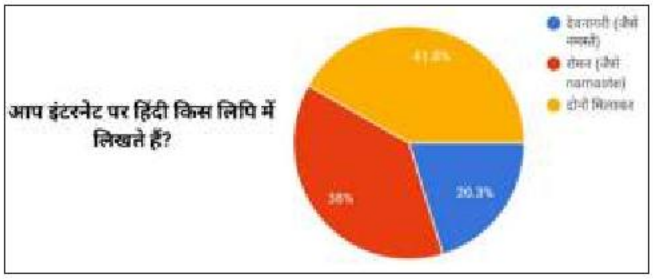
"ग्रीष्म ऋतु की बात है। एक दिन दोपहर में एक कौआ अत्यधिक प्यासा था। पानी की तलाश में वह इधर-उधर भटक रहा था।" (मानव अनुवाद: डॉ सुषमा चौबे, सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, पटना वीमेंस कॉलेज)

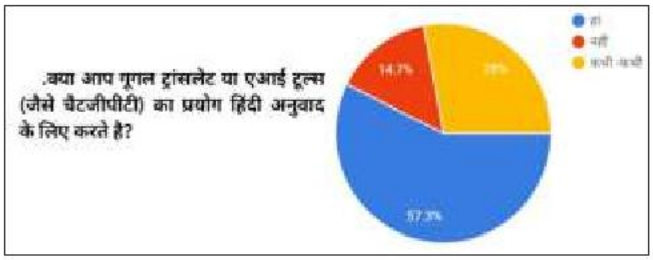
अतः मानव अनुवाद की अपेक्षा एआई कृत अनुवाद में भावनात्मक गहराई कम है तथा यह मुख्यतः शब्दानुवाद पर आधारित है, जिससे कृत्रिमता का आभास हो रहा है।

निष्कर्ष:

प्रस्तुत शोध कार्य का विषय है **'इंटरनेट की दुनिया और हिंदी का बदलता रूप'**। इस शोध कार्य के अंतर्गत हमने भूमंडलीकरण के दौर में विश्व बाजार में हिंदी का प्रयोग, इंटरनेट पर हिंदी भाषा की बढ़ती लोकप्रियता, सोशल मीडिया के प्रभाव से हिंदी की बदलती संरचना एवं अभिव्यक्ति शैली, तथा हिंदी अनुवाद के क्षेत्र में एआई की बढ़ती भूमिका को समझने का प्रयास किया है। सूचना क्रांति एवं बाजारीकरण ने हिंदी को वैश्विक स्वरूप प्रदान किया है। हिंदी सोशल मीडिया में संचार की भाषा के रूप में प्रचारित-प्रसारित हो रही है। हिंग्लिश एवं रोमनागरी का बढ़ता प्रचलन डिजिटल संचार का एक स्वाभाविक परिणाम है, जहाँ अंग्रेजी और हिंदी का मिश्रण नई पीढ़ी की पहचान बन चुका है। एआई द्वारा किया गया अनुवाद हिंदी अनुवाद के क्षेत्र में परिवर्तन लेकर आया है किंतु एआई टूल्स द्वारा किया गया अनुवाद अब भी संशय उत्पन्न करता है। शोध को विश्वसनीयता प्रदान करने हेतु हमने ऑनलाइन सर्वेक्षण किया, जिसमें विभिन्न वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी लोगों ने भाग लिया। बहुविकल्पीय एवं वर्णनात्मक प्रश्नों के माध्यम से हमने प्रतिभागियों के भाषा सम्बन्धी विचारों को जानने का प्रयास किया। **भाषा सर्वेक्षण के कुछ मुख्य प्रश्न:**







निष्कर्षतः सर्वेक्षण के अधार पर कहा जा सकता है कि टाइपिंग की सुविधा के कारण देवनागरी की अपेक्षा अधिकांश लोग हिंदी के लिए रोमन लिपि का प्रयोग करते हैं। अधिकांश लोग हिंग्लिश भाषा के प्रयोग को हिंदी के लिए अच्छा अवश्य मानते हैं, परन्तु नए-नए शब्दों के आने से हिंदी की मानकता प्रभावित होने के खतरे से भी सहमत हैं, जो अपनी भाषा के प्रति लोगों की जागरूकता को दर्शाता है। एक तरफ अधिकांश प्रतिभागियों ने यह माना कि वे अनुवाद के लिए गूगल ट्रांसलेट एवं चैटजीपीटी जैसे एआई आधारित टूल्स का प्रयोग करते हैं, जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बढ़ते महत्व की ओर संकेत करता है, तो वहीं दूसरी तरफ सर्वाधिक प्रतिभागी डिजिटल अनुवाद को आंशिक रूप से सटीक मानते हैं। तात्पर्य यह, कि मशीनी अनुवाद की क्षमता पर अब भी लोगों को पूर्ण विश्वास नहीं है। भविष्य में इंटरनेट पर हिंदी के प्रसार के विस्तार के लिए अधिकांश प्रतिभागियों का मानना है कि हिंदी में कंटेंट निर्माण का विस्तार हो वहीं कुछ प्रतिभागियों के अनुसार, हिंदी में शोध कार्य का विस्तार, उच्च गुणवत्ता वाले अनुवाद उपकरणों का निर्माण तथा हिंदी टाइपिंग के लिए सुविधाजनक फॉन्ट का निर्माण हिंदी के प्रसार के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। भविष्य में इंटरनेट पर हिंदी के स्वरूप को

लेकर प्रतिभागियों की मिली-जुली प्रतिक्रिया रही। कुछ का मानना है कि हिंदी भाषा तकनीक के सहारे इंटरनेट पर और अधिक समृद्ध होगी, वहीं कुछ प्रतिभागियों के अनुसार हिंदी केवल बोलचाल की भाषा तक सीमित रह जाएगी।

समग्रतः, यह शोध इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि डिजिटल क्रांति और बाजारीकरण ने हिंदी भाषा को वैश्विक स्वरूप प्रदान किया है। यद्यपि भाषागत शुद्धता एवं अनुशासन से जुड़े प्रश्न बने रहते हैं, तथापि वर्तमान परिदृश्य में हिंदी का यह बदलता रूप हिंदी की जीवंतता, अनुकूलनशीलता और आधुनिकीकरण का प्रमाण है। इस शोध पत्र के माध्यम से हम यह आशा करते हैं कि भविष्य में हिंदी के विकास के लिए साहित्यिक परंपरा एवं सांस्कृतिक चेतना को संरक्षित कर, भाषा की मूल आत्मा को सहेजकर, नवीनीकरण को स्वीकार किया जाए।

संदर्भ सूची :

पचौरी, सुधीश एवं शर्मा, अचला. (2002). नए जनसंचार माध्यम और हिंदी. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, **पृष्ठ सं. 21**।

प्रवीर, राकेश. (2022). आवारा मीडिया. स्वत्व प्रकाशन, **पृष्ठ सं. 218** ।

पाण्डेय, भगवानदेव एवं कुमार, योगेश. (2007). कम्प्यूटर और मीडिया. सत्यम पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, **पृष्ठ सं. 164** ।

वर्मा, कल्पना. (2015). भूमंडलीकरण और हिंदी. लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, **पृष्ठ सं**. 201।

सिंह, महिपाल एवं मिश्र, देवेंद्र. (2008). विश्व बाजार में हिंदी. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, **पृष्ठ सं. 162**।

अन्य स्त्रोत:

https://www.firstcry.com/intelli/articles/the-thirsty-crow-story-with-moral-for-kids/ – firstcry.com (14 दिसंबर, 2025)

Explore–Journal of Research
Peer Reviewed Journal
ISSN 2278 – 0297 **(Print)**
ISSN 2278 – 6414 **(Online)**
© Patna Women's College, Patna, India
https://www.patnawomenscollege.in/journal

महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में चित्रित प्रमुख पुरुष पात्रों का समाजशास्त्रीय अध्ययन

• **दीपा श्रीवास्तव** • **मंतशा वारसी** • **मधु कुमारी**
• **सुलक्षणा कौशिक**

Received : October, 2025
Accepted : January, 2026
Corresponding Author : दीपा श्रीवास्तव

शोध-सार: छायावाद की प्रसिद्ध कवयित्री महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में समाज के निम्नवर्ग के स्त्री-पुरुषों का यथार्थ चित्रण है। उनके पुरुष पात्रों का जीवन भी दुखों, अभावों, शोषण और उत्पीड़न से भरा हुआ है। ये सभी पात्र अपने जीवन में किसी न किसी रूप में सामाजिक मानदंडों, आर्थिक विषमताओं और व्यक्तिगत पीड़ाओं से जूझते हुए सामाजिक पूर्वाग्रह से ग्रस्त दिखाए गए हैं। उन्होंने अपने पुरुष पात्रों के अंतर्मन की व्यथा, संघर्ष और सामाजिक, आर्थिक तथा व्यक्तिगत चुनौतियों का जो यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है ,वह आज हमारे समाज की एक ज्वलंत समस्या है। इस परियोजना के लिए महादेवी वर्मा द्वारा रचित तीन पुस्तकों का चयन किया गया है। वे हैं –

1. 'अतीत के चलचित्र' 2. 'स्मृति की रेखाएँ' 3. 'पथ के साथी'

आज के समय में लैंगिक समानता पर व्यापक चर्चा हो रही है, परंतु इस समानता का अर्थ केवल महिलाओं के अधिकारों तक सीमित नहीं है। समाज के बदलते स्वरूप में पुरुष भी अलग-अलग प्रकार की प्रताड़ना, मानसिक दबाव, कानूनी दुरुपयोग और सामाजिक उपेक्षा का सामना कर रहे हैं। इस वजह से "प्रताड़ित पुरुष" का मुद्दा आधुनिक समाज में अत्यंत प्रासंगिक और विचारणीय बन गया है। वर्तमान समय में यह विषय इसलिए प्रासंगिक है क्योंकि पुरुषों की पीड़ा, समस्याएँ और अधिकार कई बार सामाजिक धारणाओं, रुढ़ियों और कानूनी असंतुलन के कारण अनदेखे रह जाते हैं। इसलिए आवश्यक है कि हम पुरुषों की समस्याओं को अनदेखा न करें, बल्कि समानता और न्याय के सिद्धांतों के अनुसार एक संतुलित, निष्पक्ष और संवेदनशील समाज का निर्माण करें। महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों के पुरुष पात्रों का समाजशास्त्रीय अध्ययन करते हुए तद्विषयक उनके विचारों की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालना इस शोध पत्र का उद्देश्य है। इस शोध के अंतर्गत शोध प्रविधि की द्वितीयक और समाजशास्त्रीय पद्धति का प्रयोग किया गया है ।तथ्यों के संग्रह के लिए संबंधित पुस्तकों ,पत्र पत्रिकाओं, न्यूज़ चैनल और इंटरनेट की मदद ली गई है।

निष्कर्ष :- शोध के उपरांत यह निष्कर्ष निकलता है कि महादेवी वर्मा के पुरुष पात्र तत्कालीन ही नहीं वर्तमान समाज के भी आईना हैं ।उनके द्वारा चित्रित पुरुष पात्रों की विडंबना और तद्विषयक उनके विचार आज भी प्रासंगिक हैं।

बीज शब्द :-समाजशास्त्रीय अध्ययन ,कानूनी असंतुलन, रूढ़िवादी मानदंड, लैंगिक समानता।

दीपा श्रीवास्तव
Assistant Professor, Department of Hindi,
Patna Women's College (Autonomous),
Bailey Road, Patna–800 001, Bihar, India
E-mail: deepa.hindi@patnaewomenscollege.in

मंतशा वारसी
B.A. III year, Hindi (Hons.), Session: 2023-2027,
Patna Women's College (Autonomous),
Patna University, Patna, Bihar, India

मधु कुमारी
B.A. III year, Hindi (Hons.), Session: 2023-2027,
Patna Women's College (Autonomous),
Patna University, Patna, Bihar, India

सुलक्षणा कौशिक
B.A. III year, Hindi (Hons.), Session: 2023-2027,
Patna Women's College (Autonomous),
Patna University, Patna, Bihar, India

भूमिका:

इस परियोजना में महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में चित्रित पुरुष पात्रों का समाजशास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। समाजशास्त्र समाज और मानव जीवन का वैज्ञानिक अध्ययन है।इसके अंतर्गत समाज, सामाजिक संस्थाओं, सामाजिक प्रक्रियाओं, मान्यताओं, मूल्यों और व्यक्तियों के बीच पारस्परिक संबंधों का वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित तरीके से अध्ययन किया जाता है। साहित्य के समाजशास्त्रीय अध्ययन से अभिप्राय है कि किसी रचनाकार के निर्माण काल का सामाजिक वास्तविकता से क्या संबंध है अर्थात् कहाँ तक उसके रूप की व्याख्या तत्कालीन सामाजिक यथार्थ द्वारा हो सकती है? उसका तत्कालीन समाज पर क्या प्रभाव पड़ा और उसने सामाजिक दिशा को किस प्रकार प्रभावित किया-

"युग-विशेष एवं समाज-विशेष का साहित्य अनिवार्य रूप में अपने देश-काल की वास्तविकताओं को प्रतिफलित करता है।" (देवराज, 2021)

"वह युगजीवन को बदलने का अस्त्र भी बन जाता है।" (देवराज, 2021)

छायावाद की प्रसिद्ध कवयित्री महादेवी वर्मा एक प्रसिद्ध गद्यकार भी हैं। उन्होंने गद्य लेखन के अंतर्गत रेखाचित्रों की रचना भी की है। ये रेखाचित्र 'अतीत के चलचित्र' और 'स्मृति की रेखाएँ' में संकलित हैं। इन रेखाचित्रों में समाज के निम्नवर्ग के स्त्री-पुरुषों का यथार्थ चित्रण है। ये सभी पात्र शोषित, पीड़ित और वंचित वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं और लेखिका के स्नेह के पात्र भी हैं। इनके माध्यम से उन्होंने गरीबी, अशिक्षा, रुढ़िवादी सोच, सामाजिक पूर्वाग्रह जैसी समस्याओं को दर्शाया है। सिर्फ महिलाएँ ही नहीं उनके पुरुष पात्रों का जीवन भी दुखों, अभावों, शोषण और उत्पीड़न से भरा हुआ है। अलोपी, चीनी भाई, बदलू, रामा और ठकुरी बाबा जैसे वास्तविक चरित्रों की कहानी आँसुओं से भरी है। 'पथ के साथी' महादेवी वर्मा द्वारा रचित प्रसिद्ध संस्मरण संग्रह है, जिसमें उन्होंने अपने जीवन-पथ पर साथ देने वाले साहित्यकार साथियों के सजीव चित्र अंकित किए हैं। ये सभी पात्र अपने जीवन में किसी न किसी रूप में सामाजिक मानदंडों, आर्थिक विषमताओं और व्यक्तिगत पीड़ाओं से जूझते हुए सामाजिक पूर्वाग्रह से ग्रस्त दिखाए गए हैं। उन्होंने अपने पुरुष पात्रों के अंतर्मन की व्यथा, संघर्ष और सामाजिक ,आर्थिक तथा व्यक्तिगत चुनौतियों का जो यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है ,वह आज हमारे समाज की एक ज्वलंत समस्या है।

उद्देश्य:

सामान्य उद्देश्य: महादेवी वर्मा ने अपने रेखाचित्रों के माध्यम से तत्कालीन समाज में व्याप्त अनेक सामाजिक समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है। अपने पात्रों के कारुणिक वर्णन के साथ उन्होंने सामाजिक पूर्वाग्रह, समाज में व्याप्त अन्याय और असमानता के प्रति विद्रोह का भाव व्यक्त किया है। इनमें निम्नवर्गीय स्त्रियाँ और पुरुष दोनों शामिल हैं। उनके रेखाचित्रों में वर्णित शोषित, पीड़ित तथा वंचित वर्ग के पुरुष पात्रों का समाजशास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत करना इस शोध परियोजना का सामान्य उद्देश्य है।

विशिष्ट उद्देश्य: महादेवी वर्मा ने अपने रेखाचित्रों के पुरुष पात्रों की जिन समस्याओं, मानसिक यंत्रणा और भावनात्मक उत्पीड़न का चित्रण किया है, वह आज हमारे समाज की एक विद्रूप सच्चाई है। आज हर वर्ग के पुरुष अपने दैनिक जीवन में इन उलझनों का सामना कर रहे हैं। महादेवी वर्मा के तद्विषयक विचारों की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालना इस शोध परियोजना का विशिष्ट उद्देश्य है।

अध्ययन पद्धति: इस परियोजना के लिए शोध प्रविधि की द्वितीयक और समाजशास्त्रीय पद्धति का प्रयोग किया गया है। तथ्यों और सूचनाओं के संग्रह के लिए पूर्व प्रकाशित शोध ग्रंथों, पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं और इंटरनेट की मदद ली गई है।

साहित्य समीक्षा:

साहित्य समीक्षा के अंतर्गत महादेवी वर्मा के गद्य साहित्य पर आधारित शोध ग्रंथों तथा संदर्भ ग्रंथों की समीक्षा की गई है, जिनमें प्रमुख हैं -

1. महादेवी वर्मा: काव्य, कला और जीवन दर्शन - (सं॰ शची रानी गुर्टू)

2. महीयसी महादेवी- (गंगा प्रसाद पांडेय)

3. महादेवीः प्रतिनिधि गद्य रचनाएँ - (सं. डॉ. रामजी पांडेय)

शोध अंतराल के अंतर्गत पाया गया कि महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों के स्त्री पात्रों पर नारी संवेदना, स्त्री चेतना आदि के अंतर्गत विशद विवेचन और शोध तो किया गया है, लेकिन पुरुष पात्रों का समग्र अध्ययन नहीं किया गया है। इस दृष्टि से यह विषय मौलिक और बिल्कुल नया है। इस शोध के माध्यम से महादेवी वर्मा रचित पुरुष पात्रों का समाजशास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत किया गया है और इस तथ्य पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है कि महादेवी जी अपने पुरुष पात्रों के प्रति भी उतनी ही संवेदनशील हैं जितनी स्त्री पात्रों के प्रति।

'अतीत के चलचित्र' के पुरुष पात्र:

महादेवी वर्मा का रेखाचित्र संग्रह 'अतीत के चलचित्र' साधारण जीवन जीने वाले पुरुषों के संघर्ष, त्याग, बलिदान और मानवीय गुणों को दर्शाता है। इसमें अंकित पात्र - घीसा, रामा, अलोपी और बदलू - ये कुछ ऐसे पात्र हैं जो काफ़ी हद तक पुरुषों की भावनाओं और जिम्मेदारियों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

रामा - रामा एक ऐसा बालक है , जो अपनी विमाता के अत्याचारों से बचने के लिए घर छोड़ देता है और भटकते-भटकते लेखिका के घर पहुंच जाता है। लेखिका की माता ने रामा को भूखे-प्यासे देख उसे खाने और रहने की जगह दी और अपने बच्चों की भाँति उससे लगाव रखा। फलस्वरुप रामा ने खुद को इनकी सेवा में लगा दिया। लेकिन इसकी हिम्मत तब टूट गई जब इसकी पत्नी भी छोड़कर चली गयी। रामा न तो अपने दुख को दूसरों के सामने प्रकट कर सकता था और न ही खुलकर रो सकता था। बस अंदर-ही-अंदर घुट रहा था; जिससे उसकी तबीयत खराब हो जाती है। महादेवी वर्मा लिखती हैं - "उस बार जाकर लौटना सम्भव न हो सका। बहुत दिनों के बाद पता चलता है कि वह अपने घर में बीमार पड़ा है।"

(वर्मा, 2008)

घीसा - घिसटकर चलने की आदत के कारण उसका नाम 'घीसा' पड़ा। इसका जीवन निर्धनता और अभावों से घिरा था, किंतु इसमें पढ़ाई की गहरी लगन और अपने गुरु के प्रति अटूट श्रद्धा थी। महादेवी वर्मा लिखती हैं - "पढ़ने में सबसे आगे , व्यवहार में विनम्र, पुस्तक में एक भी धब्बा न लगाने, स्लेट को चमचमाती रखने और अपने छोटे-से-छोटे काम का उत्तरदायित्व बड़ी गम्भीरता से निभाने में उसके समान कोई चतुर न था।"

(वर्मा, 2008)

घीसा के मन में लेखिका के लिए कितना प्रेम था, वह उसके लाए गुरु-दक्षिणा से साफ़ पता चलता है। पैसे नहीं होने के कारण अपना एकमात्र नया कुर्ता देकर एक तरबूज वह उनके लिए उपहार स्वरूप ले आया। इस पर लेखिका कहती है- "किसी गुरु को किसी शिष्य से कभी ऐसी दक्षिणा मिली होगी, ऐसा मुझे विश्वास नहीं, परंतु उस दक्षिणा के सामने संसार में अबतक सारे आदान-प्रदान फीके जान पड़े।"

(वर्मा, 2008)

अलोपी- अलोपी तेईस वर्षीय "ऊंची धोती और मैली बंडी में अपने कंकाल को यथासंभव मुक्ति दिए एक अंधा" पुरुष है ,जिसने कभी सुख नहीं भोगा।

(वर्मा, 2008)

हमारा समाज इतना निर्दयी है कि एक अंधे व्यक्ति को भी ताना देने से पीछे नहीं हटता। पिता की मृत्यु के पश्चात् इसका जीवन सदा संघर्षो में व्यतीत हुआ। अपने घर में वह एक मात्र पुरुष ही बचा था, जिसे अपनी माता के लिए अंधे होते हुए भी काम पर जाना पड़ा ताकि घर में इसकी माँ सुख से जीवन व्यतीत कर सके । लेखिका के अनुसार – "पिता की मृत्यु के पश्चात् भी सब्जियां लेकर फेरी लगाती है, पर पुत्र को अच्छा नहीं लगता है कि जवान आदमी बैठा रहे और बुढ़िया मर-मर कर कमाए। इसी से शाक सब्जियों के तत्ववेत्ता ताऊ से यहाँ की चर्चा सुन वह काम की खोज में निकल पड़ा।"

(वर्मा, 2008)

यह बात एक पुरुष के मन में बचपन से ही डाल दी जाती है कि वह चाहे कितने भी कष्ट में क्यों न हो, चाहे अंधा ही क्यों न हो फिर भी उसे ही कमाना होगा। नहीं तो समाज क्या सोचेगा कि जवान बेटा घर पर बैठा है और उसकी बूढ़ी माता बाहर जाकर काम कर रही है। इसलिए अलोपी काम पर निकल जाता है। तभी इसकी मुलाकात लेखिका से होती है। अलोपी रोज ही लेखिका और छात्रावास की छात्राओं के लिए सब्जियां लेकर जाता था। इन छात्राओं को अलोपी अपनी छोटी बहन समझकर इन्हें फिर सब्जियों के प्रकार और खेतों के बारे में बताता। वह पूरे प्रेमपूर्वक इनके लिए सब कुछ लाता। लेकिन अलोपी तब पूरी तरह से टूट गया जब इसकी पत्नी सारे पैसों को लेकर भाग गई। इस घटना के बाद अलोपी बिल्कुल शांत पड़ गया। वह न तो रो पा रहा था और न खुलकर अपनी बात कह पा रहा था। अलोपी का जीवन इस बात का प्रमाण है कि पुरुष का जीवन भी आसान नहीं होता है, बल्कि संघर्षो से भरा होता है।

बदलू - यह एक परिश्रमी और साधारण सा व्यक्ति था। सभी लोग इसे एक गंवार कुंभकार बुलाते थे ,जिससे शुरू में ठीक से एक घड़ा भी नहीं बन पाता था; लेकिन बाद में अपनी लगन और निरंतर प्रयास करते-करते सुंदर मूर्तियां बनाने लगा।

महादेवी वर्मा के "अतीत के चलचित्र" के पुरुष पात्र यह संदेश देते हैं कि पुरुष का मौन दुख और उसका संघर्ष समाज को उतना ही समझना चाहिए, जितना स्त्री की पीड़ा को। तभी जीवन में वास्तविक संतुलन और मानवीय संवेदना स्थापित हो सकेगी।

'स्मृति की रेखाएँ' के पुरुष पात्र:

इस संग्रह में कुल सात रेखाचित्र हैं, जिनमें पुरुष पात्र हैं -

चीनी भाई: चीनी फेरीवाला का नाम ही उसके पेशे का संकेत देता है। वह अपने व्यवसाय के माध्यम से ग्रामीण बाजार और मेलों में सक्रिय रहता है। वह आर्थिक दृष्टि से मध्यम या निम्न वर्ग का व्यक्ति है, जो अपने व्यवसाय के जरिए जीविकोपार्जन करता है।इस रेखाचित्र में उसके जीवन की विंडबना का सजीव चित्रण है ।

जंगबहादुर : जंगबहादुर नेपाल का निवासी था। वह एक गरीब परिवार से आया था। भारत आकर यह महादेवी वर्मा के घर में सेवक बन गया। उसके पास अधिक पढ़ाई-लिखाई नहीं थी, परंतु व्यावहारिक बुद्धि और अनुभव बहुत गहरा था । उसने महादेवी जी के परिवार को अपना ही परिवार मान लिया। जंगबहादुर ने अपने काम को केवल नौकरी की दृष्टि से कभी नहीं देखा, बल्कि उसे कर्तव्य और निष्ठा का धर्म समझा। यही कारण था कि महादेवी वर्मा ने उसे केवल सेवक नहीं बल्कि परिवार का सदस्य माना। उसमें बनावटीपन या छल-कपट नहीं था। मालिक के लिए वह हर परिस्थिति में खड़ा रहता। उसे जो काम सौंपा जाता वह तन-मन से कर देता। महादेवी वर्मा ने उसे एक ऐसे चरित्र के रूप में प्रस्तुत किया है, जिसने साबित किया कि मनुष्य का मूल्य उसके पद या वर्ग से नहीं बल्कि उनके गुणों और कर्मों से तय होता है।

ठकुरी बाबा: 'ठकुरी बाबा ' महादेवी वर्मा के अन्य रेखाचित्रों से कई अर्थों में भिन्न है। इसमें ठकुरी बाबा और उनके संगी साथियों का जो जीवन चित्र प्रस्तुत किया है, उससे भारतीय ग्राम्य समाज के सबसे दरिद्र और उत्पीड़ित लोगों के जीवन की करुणा हमारे सामने उभर आई है। लेकिन लेखिका ने इसके माध्यम से उन सवालों को भी गहरी पीड़ा के साथ प्रस्तुत किया है, जिसने उनके जीवन को कष्टमय

बना रखा है। ' ठकुरी बाबा ' में महादेवी वर्मा ने रेखाचित्र के परंपरागत ढाँचे को तोड़ा है। भाषा की जो रचनात्मक शक्ति दिखाई देती है, वह इस बात का प्रमाण है कि महादेवी का गद्य कितना उत्कृष्ट हैं- "यौवन के प्रथम प्रहर में सारे स्नेहबंधन तोड़ जाने वाली पत्नी ने उनके हृदय को हिला दिया।"

(वर्मा, 2008)

ठकुरी बाबा के माध्यम से उन्होंने अपने समय और समाज दोनों के गहरे अंतर्विरोधों को भी उजागर किया है। महादेवी की सहानुभूति समाज के पद-दलित और उत्पीड़ित लोगों के प्रति है। 'ठकुरी बाबा ' में ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण है।

दो पर्वत पुत्र: 'दो पर्वत पुत्र' दो पर्वतीय बालकों की दुर्दशा का चित्र है। लेखिका को जंगिया और धनिया नाम के दो भाई कुली के रूप में मिले। इन दोनों भाइयों की स्वामीभक्ति, सेवाभाव ,भ्रातृप्रेम को रेखाचित्र में चित्रित किया गया है। अपने स्वामी की भक्ति में वे स्वार्थ का बलिदान करने में तत्पर हैं। अपनी पहाड़ी यात्रा के समय लेखिका को कुलियों के साथ अमानवीय व्यवहार करने वाले जो महंत मठाधीश धनपति मिलते हैं, उनपर भी उन्होंने गहरा व्यंग्य किया है। इस रेखाचित्र में मानव समाज के कुत्सित घिनौने रूप के दर्शन भी होते हैं।

'पथ के साथी' के पुरुष पात्र:

मैथिलीशरण गुप्त : मैथिलीशरण गुप्त 'पथ के साथी' का दूसरा रेखाचित्र है।महादेवी के इस चित्र में तटस्थता के साथ ही स्नेहभाव की अभिव्यक्ति दिखाई देती है- "गुप्त जी के बाह्य दर्शन में ऐसा कुछ नहीं है, जो उन्हें असाधारण सिद्ध कर सके। साधारण मझोला कद, साधारण छरहरा गठन, साधारण गहरा गेहुँआ या हल्का साँवला रंग, साधारण पगड़ी, अंगरखा, धोती या उसका आधुनिक संस्करण , गाँधी टोपी, कुरता धोती और इस व्यापक भारतीयता से सीमित सांप्रदायिकता का गठबंधन सा करती हुई तुलसी कंठी। अपने रूप और वेश दोनों में वे इतने अधिक राष्ट्रीय हैं कि भीड़ में मिल जाने पर शीघ्र ही खोज नहीं निकाले जा सकते।"

(वर्मा, 2008)

बाह्य वर्णन इतना सजीव हो उठा है कि गुप्त जी सजीव रूप से उपस्थित हुए है। किंतु गुप्त जी का सामान्य रूप वर्णित करना ही लेखिका का उद्देश्य नहीं है अपितु इस सामान्य रूप एवं वेश में से ही उनके असामान्यत्व की झलक प्रस्तुत करना चाहती हैं। वर्ण्य के आंतरिक गुण एवं स्वभावगत विशेषताओं को महादेवीजी ने अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला': सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' पर लिखा गया रेखाचित्र सबसे अधिक हृदयस्पर्शी और संवेदनशील है। इस रेखाचित्र में महादेवी वर्मा ने केवल एक कवि का नहीं, बल्कि एक ऐसे महान और असाधारण पुरुष का चित्र खींचा है; जो समाज की सीमाओं से परे रहकर सत्य, स्वाभिमान और स्वतंत्रता के मार्ग पर चलता है। महादेवी वर्मा और निराला जी का संबंध अत्यंत आत्मीय था। महादेवी वर्मा ने लिखा कि निराला जी अपने अतिथि के प्रति इतने सजग थे कि अपनी तकलीफों और अभावों की परवाह किए बिना उनका पूरा ध्यान रखते थे। यह वर्णन दिखाता है कि उनके अंदर दयालुता, आत्मीयता और विशाल हृदय का अद्भुत मेल था - "भोजन बनाने से लेकर झूठे बर्तन मांजने तक का काम वे अपने अतिथि देवता के लिए सहर्ष करते हैं।"

(वर्मा,2008)

जयशंकर प्रसाद: जयशंकर प्रसाद पर लिखा गया रेखाचित्र विशेष रूप से उल्लेखनीय है। महादेवी वर्मा ने प्रसाद जी का केवल बाहरी रूप ही नहीं दिखाया, बल्कि उनके मन, विचार, आदर्श और उनके भीतर की भावनाओं को भी गहराई से चित्रित किया है। प्रसाद में संयम, धैर्य और वेदना सहने की अद्भुत क्षमता थी। वे मौन तपस्वी की तरह समाज और साहित्य की सेवा करते थे। उनका व्यक्तित्व यह दिखाता है कि सच्चे पुरुष का मूल्य केवल बाहरी शक्ति, दौलत या प्रसिद्धि में नहीं होता बल्कि उनके आदर्श, कर्तव्य और समाज के प्रति निष्ठा में होता है। इस रेखाचित्र में महादेवी वर्मा ने प्रसाद के जीवन के माध्यम से समाज में ऐसे पुरुषों की दशा का दर्शन कराया है, जो त्यागी, कर्मयोगी, विनम्र और निस्वार्थ होते हैं। ऐसे पुरुष समाज के लिए दीपक की तरह होते हैं, जो अपने प्रकाश से दूसरों को आलोकित करते हैं; लेकिन स्वयं अक्सर उपेक्षित रह जाते हैं। उनका जीवन सादगी, संयम, निष्ठा और संवेदनशीलता का आदर्श प्रस्तुत करता है।

सियारामशरण गुप्त: इस रचना में महादेवी वर्मा ने सियारामशरण गुप्त जी के माध्यम से समाज में ऐसे पुरुषों की दशा दिखाई है, जो अपने आदर्श, कर्म और निष्ठा के लिए जीवन जीते हैं; पर समाज और समय की नजर में अक्सर उपेक्षित रह जाते हैं। सियारामशरण गुप्त हिंदी के प्रसिद्ध कवि थे। उनका जीवन सरल, साधारण और संघर्षपूर्ण था। महादेवी वर्मा ने उनके जीवन की मौन साधना, विनम्रता और निस्वार्थ भाव को बहुत कोमल और प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत किया है।

महादेवी वर्मा ने 'पथ के साथी' के माध्यम से यह दिखाया है कि सच्चा पुरुष वही है, जो अपने आदर्श, निष्ठा और संवेदनाओं के प्रति अडिग रहता है। वह अपनी सेवा और कार्य में निस्वार्थ होता है। समाज और समय की उपेक्षा से प्रभावित नहीं होता। उनका जीवन यह सिखाता है कि पुरुष का वास्तविक मूल्य उसके आदर्शों, संयम

और त्याग में है, न कि केवल बाहरी शक्ति, वैभव या प्रसिद्धि में। महादेवी वर्मा का यह संकलन पाठक को प्रेरित करता है और समाज में ऐसे पुरुषों के महत्व को उजागर करता है।

वर्तमान परिवेश में पुरुषों की स्थिति:

तकनीकी प्रगति, आर्थिक प्रतिस्पर्धा और सांस्कृतिक बदलावों के बीच जहाँ एक ओर नई संभावनाएँ खुल रही हैं, वहीं दूसरी ओर व्यक्ति पर नए-नए दबाव भी बढ़ रहे हैं। इस बदलते परिवेश में पुरुषों की स्थिति विशेष रूप से विचारणीय है। परंपरागत रूप से उन्हें परिवार का पालनकर्ता और समाज का संरक्षक माना गया है, परंतु आधुनिक युग में उनकी भूमिकाएं और भी जटिल हो गई हैं। आज के समय में लैंगिक समानता पर व्यापक चर्चा हो रही है, परंतु इस समानता का अर्थ केवल महिलाओं के अधिकारों तक सीमित नहीं है। समाज के बदलते स्वरूप में पुरुष भी अलग-अलग प्रकार की प्रताड़ना, मानसिक दबाव, कानूनी दुरुपयोग और सामाजिक उपेक्षा का सामना कर रहे हैं। इस वजह से 'प्रताड़ित पुरुष' का मुद्दा आधुनिक समाज में अत्यंत प्रासंगिक और विचारणीय बन गया है। कानूनी परिवेश में पुरुषों के साथ होने वाली प्रताड़ना भी एक महत्वपूर्ण मुद्दे के रूप में उभर कर सामने आई है। वर्तमान समय में यह विषय इसलिए प्रासंगिक है क्योंकि पुरुषों की पीड़ा, समस्याएँ और अधिकार कई बार सामाजिक धारणाओं, रुढ़ियों और कानूनी असंतुलन के कारण अनदेखे रह जाते हैं।

1. सामाजिक रूढ़ियाँ और मौन पीड़ा: समाज में यह मान्यता बनी हुई है कि पुरुष मजबूत होते हैं और उन्हें दर्द या अन्याय व्यक्त नहीं करना चाहिए। इसी कारण प्रताड़ित पुरुष अपनी पीड़ा व्यक्त नहीं कर पाते, जिससे उनका मानसिक तनाव और बढ़ जाता है।

2. कानूनी असंतुलन: कई देशों, विशेषकर भारत में, कुछ कानून अत्याचार से महिलाओं की सुरक्षा के लिए बनाए गए हैं, परंतु कुछ मामलों में इनका दुरुपयोग कर पुरुषों को झूठे मामलों में फंसाया जाता है।

उदाहरणः दहेज उत्पीड़न ,घरेलू हिंसा के गलत आरोप,झूठे यौन उत्पीड़न के केस। इन स्थितियों में पुरुष भी कानूनी और सामाजिक उत्पीड़न का सामना करते हैं।

वर्तमान समय में प्रताड़ित पुरुषों की संख्या इसलिए बढ़ी है क्योंकि समाज अब लैंगिक समानता को नए दृष्टिकोण से देख रहा है।

पुरुष भी मानसिक , सामाजिक ,आर्थिक और कानूनी अत्याचारों के शिकार हो सकते हैं। इसलिए आवश्यक है कि हम पुरुषों की समस्याओं को अनदेखा न करें, बल्कि समानता और न्याय के सिद्धांतों के अनुसार एक संतुलित, निष्पक्ष और संवेदनशील समाज का निर्माण करें।जब हम हर पीड़ित की आवाज सुनेंगे तभी वास्तविक लैंगिक न्याय होगा।

महादेवी वर्मा के पुरुष पात्रों में अलोपी और रामा पत्नी केद्वारा, ठकुरी बाबा परिवार के द्वारा तथा चीनी भाई समाज के द्वारा प्रताड़ित थे जबकि निराला जी आर्थिक एवम् भावनात्मक शोषण के शिकार थे।इस दृष्टि से उनके ये पात्र वास्तविक अर्थ में तत्कालीन और वर्त्तमान समाज के प्रतिबिंब हैं।

निष्कर्ष और सुझाव:

निष्कर्ष : व्यक्ति तथा समाज का संबंध सापेक्ष कहा जा सकता है, क्योंकि एक के अभाव में दूसरे की उपस्थिति संभव नहीं।" (वर्मा, 2008)

समाजशास्त्रीय दृष्टि से देखें तो महादेवी वर्मा के पुरुष पात्र अपने समय और समाज के प्रतिबिंब हैं। इनमें परिवार के प्रति उत्तरदायित्व ,आर्थिक सीमाएँ, शैक्षिक संघर्ष, धार्मिक आस्थाएँ और सामाजिक मूल्य स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं। साहित्य समाज का दर्पण है और महादेवी वर्मा के रेखाचित्र इस कथन को सत्य प्रमाणित करते हैं। उनके पात्र केवल जीवंत संस्मरण नहीं बल्कि एक वर्ग, एक समाज और एक युग की मानसिकता का प्रतिनिधित्व करते हैं। महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में चित्रित पात्रों में स्त्रियां भी हैं और पुरुष भी। किंतु पुरुष पात्रों का चित्रण विशेष महत्व रखता है क्योंकि वे अपने - अपने सामाजिक परिवेश, जीवन मूल्यों और मानसिक प्रवृत्तियों के प्रतिनिधि बनकर सामने आते हैं। उनके पात्रों में त्याग, करुणा और जीवन-संघर्ष की सामाजिक वास्तविकताएँ अभिव्यक्त होती हैं। महादेवी वर्मा की दृष्टि इन पात्रों को केवल व्यक्ति के रूप में नहीं देखती बल्कि उन्हें समाज की उस जटिल संरचना का हिस्सा मानती है ,जो मानवीय संबंधों ,जातीय सांस्कृतिक मान्यताओं और आर्थिक परिस्थितियों से निर्मित होती है। इस परियोजना में महादेवी वर्मा रचित पुरुष पात्रों के व्यक्तित्व के निर्माण में संस्कृति एवं सामाजिक अनुभव की भूमिका को प्रदर्शित किया गया है क्योंकि सामाजीकरण व्यक्ति के विकास में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

स्विस मनोविश्लेषणशास्त्री कार्ल गुस्टाव युंग (सी॰ जी॰ जंग) ने व्यक्तित्व को दो प्रमुख प्रकारों में विभेदित किया – (i) अन्तर्मुखी (Introvert) तथा (ii) बहिर्मुखी (Extrovert)

(i) अन्तर्मुखी - ऐसे व्यक्ति स्वयं अपनी आंतरिक अनुभूतियों एवं विचारों में लीन रहता है। वह अपनी ही कल्पनाओं में खोया रहता है। वह आत्मकेंद्रित होता है।

(ii) बहिर्मुखी- बाह्य जगत के कार्यों में सक्रिय भाग लेता है। वह अत्यंत व्यावहारिक होता है।

(भूषण, 1979)

महादेवी जी के पुरुष पात्र अंतर्मुखी भी हैं और बहिर्मुखी भी ।यदि हम भारत की बात करें तो भारतीय समाज परंपरागत रूप से पितृसत्तात्मक रहा है, जहाँ पुरुष को परिवार और समाज का मुखिया माना गया है। किंतु आधुनिकता, शिक्षा और वैश्वीकरण के प्रभाव से पुरुष की सामाजिक भूमिका में भी परिवर्तन आया है। आधुनिक पुरुष समाज परिवर्तनशील अवस्था में है। अब पुरुष केवल 'शक्ति' का प्रतीक नहीं बल्कि 'संवेदनशीलता' और 'समानता' का सहभागी बनता जा रहा है। समाज को पुरुषों को भी भावनात्मक स्वतंत्रता और सहयोग प्रदान करना चाहिए।

महादेवी वर्मा ने अपने रेखाचित्रों के माध्यम से सामाजिक व्यवस्था और रूढ़िवादी मानदंडों पर भी सवाल उठाए हैं। उन्होंने उन पुरुषों की आलोचना की है , जो महिलाओं के प्रति भेदभावपूर्ण रवैया रखते है या सामाजिक अन्याय को बढ़ावा देते हैं। उनके लेखन में पुरुष पात्रों को आत्मचिंतन करते हुए और अपने जीवन के अर्थ की तलाश करते हुए भी दिखाया गया है। इन्होंने अपने रेखाचित्रों में विभिन्न प्रकार के पुरुषों को चित्रित किया है, जैसे लेखक, विद्यार्थी, सेवक, किसान, मजदूर और कलाकार । इन सभी पात्रों के माध्यम से उन्होंने पुरुष जीवन के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया है।

महादेवी वर्मा के साहित्य में पुरुष संवेदना एक महत्वपूर्ण विषय है। उन्होंने पुरुषों को एक जटिल और बहुआयामी रूप में चित्रित किया है; जो सामाजिक, आर्थिक और व्यक्तिगत चुनौतियों का सामना करते हैं। उनके लेखन में पुरुष पात्रों के भीतर की संवेदना,संघर्ष और आत्मचिंतन को उजागर किया गया है। कुल मिलाकर महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में पुरुष समाज का एक व्यापक और यथार्थ चित्रण मिलता है, जिसमें सामाजिक विषमताओं, उत्पीड़न और वंचित पुरुष वर्ग के प्रति सहानुभूति व्यक्त की गई है। महादेवी जी ने 1935 में लिखे अपने निबंध 'स्त्री के अर्थ स्वातंत्र्य का प्रश्न' में चेतावनी दी थी - समाज यदि स्वेच्छा से उसकी स्थिति में परिवर्तन या संशोधन नहीं करेगा तो "स्त्री का विद्रोह दिशाहीन आँधी जैसा वेग पकड़ता जाएगा और तब एक निरंतर ध्वंस के अतिरिक्त समाज उससे कुछ और न पा सकेगा।" (वर्मा, २००८)

उनके पुरुष पात्र तत्कालीन ही नहीं वर्तमान समाज के भी आईना हैं और उनका यह कथन 90 वर्ष बाद भी अक्षरशः सत्य तथा प्रासंगिक है।

सुझाव: महिलाओं के लिए तो अनेक संगठन, हेल्पलाइन और कानून मौजूद हैं, परंतु पुरुषों के लिए हेल्पलाइन कम है , सहायता संगठन सीमित हैं और समाज में जागरुकता का अभाव है । इस कमी के कारण पुरुष और अधिक असहाय महसूस करते हैं। इस स्थिति में सुधार लाने हेतु सुझाव :-

1. काउंसलिंग को सामान्य बनाना ।
2. पुरुषों के लिए सामुदायिक चर्चा समूह व मेंटल हेल्थ क्लब
3. फर्जी मामलों से सुरक्षा: पुरुषों के खिलाफ झूठे केस पर सख्त कार्यवाही तथा तेज जाँच तंत्र होना चाहिए।
4. पुरुष आयोग की स्थापना : जैसे महिला आयोग है ,उसी तरह पुरुषों की शिकायतों के लिए भी स्वतंत्र आयोग की स्थापना ।
5. जेंडर न्यूट्रल कानून।
6. वर्क - लाइफ बैलेंस : पुरुषों को भी पितृत्व अवकाश ,फ्लेक्सिबल काम आदि की सुविधाएँ।

वर्तमान समय में लैंगिक समानता का अर्थ केवल महिलाओं की सुरक्षा ही नहीं बल्कि हर लिंग को न्याय प्रदान करना है। इसलिए प्रताड़ित पुरुषों की समस्याओं को पहचानना और उनके लिए सहायता तंत्र विकसित करना अत्यंत आवश्यक है।

संदर्भ स्रोत:

आधार ग्रंथ

वर्मा, महादेवी. (2008) अतीत के चलचित्र. इलाहाबाद: लोक भारती प्रकाशन. पृष्ठ. 22, 60, 65, 72, 73)

वर्मा, महादेवी. (2008) . पथ के साथी . इलाहाबाद : लोक भारती प्रकाशन. पृष्ठ. 25, 29, 31, 53

वर्मा, महादेवी. (2008). स्मृति की रेखाएं. इलाहाबाद: लोक भारती प्रकाशन. पृष्ठ. 70

सहायक ग्रंथ

देवराज (2021). "समाजशास्त्रीय आलोचना" in भारत भारद्वाज सं. (2021), हिंदी साहित्य का दुर्लभ परिप्रेक्ष्य (भाग-2). दिल्ली: नयी किताब प्रकाशन . पृष्ठ. 17, 18

भूषण, विद्या. (1979) . समाजशास्त्र के सिद्धांत. नई दिल्ली: किताब महल डिस्ट्रीब्यूटर्स. पृष्ठ. 761)

वर्मा, महादेवी. (2008) . श्रृंखला की कड़ियां .इलाहाबाद: लोक भारती प्रकाशन. पृष्ठ. 110, 112)

Web link :

https://brandequity.economictimes.indiatimes.com (11.12.2025)